Dr. DHANVIR PRASAD

ASSISTANT PROFESSOR (G T)

C.M.J COLLEGE DONWARIHAT(KHUTONA)MADHUBANI

DEPT.OF.PSYCHOLOGY

L.N.M.U DARBHANGA

MOBILE NO:- 6206696451

E-MAIL- dhabeerparasad@gmail.com

ROLE OF SET IN THINKING OR PROBLEM SOLVING

चिंतन या समस्या समाधान में मानसिक तत्परता का बहुत बङा हाथ होता है। किसी समस्या के समाधान के पहले व्यक्ति एक मानसिक तैयारी करता है कि वह अपनी समस्या के समाधान के लिए किस प्रकार का व्यवहार करे ।इसी मानसिक प्रक्रिया को तत्परता कहते हैं। चैपलिन के अनुसार, तत्परता प्राणी की वह अस्थाई अवस्था है जो उसे एक विशेष ढंग से प्रतिक्रिया करने के लिए तत्पर बना देती है।

तत्परता का व्यवहार दिशा के अर्थ में भी किया जाता है। मायर ने तत्परता का व्यवहार इसी अर्थ में किया है। उनके अनुसार समस्या का समाधान करते समय सम्भवतः प्राणी अनुमान करता है कि इस समस्या का समाधान अमुक दिशा में व्यवहार करने से हो सकता है

भूमिका:-

चिंतन या समस्या समाधान में तत्परता का महत्वपूर्ण स्थान देखा जाता है। जब तत्परता सही होती है तो समस्या का समाधान सरल बन जाता है, लेकिन गलत तत्परता के कारण समस्या का समाधान कठिन तथा विलम्बित हो जाता है। अतः तत्परता से एक ओर समस्या समाधान मिलती है तो दूसरी ओर इससे हानी भी होती है। यहाँ हम तत्परता के लाभ पक्ष की व्याख्या करना चाहेंगे।

1. सही तत्परता के लाभ :-

तत्परता का धनात्मक मूल्य सरलीकरण के रूप में देखा जाता है। समस्या का समाधान करते

समय जब प्राणी में सही तत्परता का निर्माण होता है तो प्राणी को सही प्रतिक्रिया करने और गलत प्रतिक्रिया से बचने का लाभ होता है। तत्परता के धनात्मक मूल्य को प्रमाणित करने के लिए एक प्रारम्भिक अध्ययन वाट ने किया। उन्होंने अपने अध्ययन में देखा कि नियंत्रित समूह की अपेक्षा प्रयोगात्मक समूह के प्रयोज्यों को अपनी समस्या के समाधान में अधिक सुविधा का अनुभव हुआ। इसकी व्याख्या करते हुए वाट ने बताया कि प्रयोगात्मक समूह के प्रयोज्यों में अभ्यास के कारण सही तत्परता उत्पन्न हुई, जिससे उन्हें समस्या के समाधान में आसानी हुई ।

मायर ने अपने अध्ययन में देखा कि सही दिशा का ज्ञान हो जाने पर समस्या का समाधान बहुत आसान हो जाता है। लेकिन, यदि प्राणी गलत दिशा का अनुभव लगा लेता है तो समस्या का समाधान कठिन बन जाता है और उसे अपनी दिशा

में परिवर्तन लाना पड़ता है और तभी समस्या हल हो पाती है।उन्होंने कई समस्याओं का अध्ययन करके अपनी इस परिकल्पना को प्रमाणित करने का प्रयास किया।